जी डी गोइन्का पब्लिक स्कूल

कक्षा : नौवीं विषय:हिंदी पाठ:11

(नोट: यह कार्य केवल पठन के लिए है। इसे प्रिंट न करें।)

आदमी नामा

दुनिया में बादशाह है सो है वह भी आदमी

और मुफलिस-ओ-गदा है सो है वो भी आदमी

जरदार बेनवा है सो है वो भी आदमी

निअमत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी

टुकड़े जो चबा रहा है सो है वो भी आदमी

शब्दार्थ -

बादशाह - राजा

मुफलिस - निर्धन

गदा - भिखारी

जरदार - दौलतमंद

व्याख्या - कवि कहता है कि दुनिया में तरह तरह के आदमी होते हैं। दुनिया में चाहे कोई राजा हो या कोई आम इंसान हो सभी आदमी ही हैं। अलग-अलग आदमी की अलग-अलग जिम्मेदारियाँ होती हैं। कवि कहता है कि चाहे कोई धनी हो या निर्धन हो दोनों आदमी ही हैं। हर आदमी की अपनी अलग जीवन शैली होती है। यदि कोई मालदार या दौलतमंद भी है, वह भी आदमी ही है। कवि के कहने का तात्पर्य है कि अलग-अलग आदमी अलग-अलग काम करते हैं, अलग-अलग व्यवहार करते हैं और अलग-अलग गुणों वाले होते हैं। कवि यह

भी स्पष्ट करता है कि जो कोई स्वादिष्ट भोजन खा रहा है, वो भी आदमी है और जो सूखे टुकड़ों पर पल रहा है वो भी आदमी है।

मसजिद भी आदमी ने बनाई है यां मियाँ

बनते हैं आदमी ही इमाम और खुतबाख्वाँ

पढ़ते हैं आदमी ही कुरआन और नमाज यां

और आदमी ही उनकी चुराते हैं जूतियाँ

जो उनको ताड़ता है सो है वो भी आदमी

शब्दार्थ -

इमाम - नमाज़ पढ़ने वाले

खुतबाख्वाँ - कुरान शरीफ़ का अर्थ बताने वाला

ताड़ता - भाँप लेना

व्याख्या - कवि आदमी को आईना दिखाते हुए कहता है कि जिसने मस्जिद बनाई है। नमाज़ और कुरान को बनाने वाले भी आदमी ही हैं और उस मस्जिद में नमाज पढ़ने और पढ़वाने वाले भी आदमी ही हैं। मस्जिद के बाहर से जूते चुराने वाला भी आदमी है और उसपर नज़र रखने वाला भी आदमी है। कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि पाप करने वाला भी आदमी है और पुण्य करने वाला भी आदमी ही है।

----------XXX----------